'RESEARCH JOURNEY' International Multidisciplinary E- Research Journal
Impact Factor - (CIF) - 3.452, (SJIF) - 3.009, (GIF) -0.676 (2013)
Special Issue 40 : Globalization
UGC Approved No. 40705 & 44117
ISSN : 2348-7143
February 2018

वैश्वीकरण के युग में अपनी नई पहचान बनाती 'हिंदी'

[१]श्रीमती अनिता राजबंशी और [२]डॉ. अनिता पी. नेरे
१. स्व. अण्णासाहेब आर. डी. देवरे कला एवम् विज्ञान महाविद्यालय, म्हसदी, तह. साक्री, जि. धुलिया
२. म. स. गा. महाविद्यालय, मालेगांव कैम्प, तह. मालेगांव, जि. नासिक

वैश्वीकरण आज सारे विश्व में एक सशक्त प्रक्रिया है। वैश्वीकरण ने सारे विश्व को एक जगह और एक-दूसरे के सम्मुख खडा किया है। यह पूँजीवादी देशों का विश्व-विजय का शंखनाद है। इसने पूरी दुनिय को दो हिस्सो में बाँट दिया हैं। अमीर देश और गरीब देश। वैश्वीकरण शुद्ध रूप से बाजारवाद है जिसे उदारीकरण के मोहक शब्दजाल में बाँधा गया है। इस वैश्वीकरण और बाजारवाद की प्रक्रिया ने `अर्थ सत्य जगत मिथ्या` के सच को स्थापित किया है। भारत का `वसुधैव कुटुंबकम्` और `वैश्वीकरण ` को एक ही संकल्पना में बाँधा जा रहा है। किंतु दोनों के लक्षण अलग अलग है। `वसुधैव कुटुंबकम्` उदार चरित्र का लक्षण है। सारे विश्व में आत्मीयता स्थापित करनेवाली भावात्मक मानवीय अवधारणा है । `वसुधैव कुटुंबकम्` सभी संस्कृतियों का केंद्रबिंदू है। वह सभी संस्कृतियों के मूलभूत तत्व करुणा, सहिष्णूता, समन्वय, समता एवं कौटूंबिक समरसता आदी को एकसूत्रता में बाँधता है। किंतु वैश्वीकरण का लक्ष्य धन, भौतिक साधनों, सामग्रियों तथा सुविधाओं के बल और आकर्षण का माध्यम है। वैश्वीकरण के माध्यम से एक नई संस्कृति और नई स्थितियों को जन्म दिया है। और इस उदीयमान संस्कृति की प्रेरणा के मूल में केवल फैलता हुआ बाजार है। इसने वित्त, मुद्रा, व्यापार, रोजगारों के अवसर और उनकी प्रकृति, सामाजिक संरचना, जीवन शैलियाँ, शिक्षा और व्यावसायिक प्रशिक्षण का स्वरुप आदि सभी क्षेत्रों को गहरे रूप से प्रभावित किया है। यह सब परिवर्तन सूचना और संचार के क्षेत्रों में हुई अभूतपूर्व टेक्नोलॉजिकल प्रगति का परिणाम है। जनसंचार माध्यम वैश्वीकरण के प्रमुख संवाहक है। सूचना प्रौदयोगिकी ने औदयोगिक उपक्रमों, शिक्षण संस्थानों एवं सार्वजनिक उपक्रमों को इंटरनेट पर रखकर योग्य हुनरमंद लोगों को मुक्त गगन का पक्षी बना दिया है। जिनके पास सृजनात्मकता है, विशेषज्ञता है, नए विचार, नई योजनाएँ, बुध्दिकौशल, उद्दिमता है। वे ही इस स्पर्धा के युग में पैर जमा सकते है। इस दृष्टि से जो जमाने के साथ कदम ताल नहीं मिला पाएँगे वे जीवन की दौड में बहुत पीछे छुट जाएँगे। संक्षेप में आज का विश्व तेजी से आगे बढ रहा है। विश्व में एकीकरण हो रहा है। सांस्कृतिक, अभिव्यक्ति में जीवन मूल्यों और जीवनशैली में शिक्षा के उद्देश्यों, पाठ्यक्रमों और माध्यमों में एकरूपता बढ रही है। लोग अपनी विरासत छोडकर कंचनमृग के पीछे भाग रहे है। विश्व स्तर पर समृद्धि और सृजनात्मकता बढ रही है।

वैश्वीकरण के इस युग में साहित्य प्रसारण का भी अलग पैमाना है। साहित्य व्यक्ति की शाश्वत आकांक्षाओं तथा मानसिक सुख की धरोहर की संवाहक है और रहेंगा। भूतकाल में भी साहित्य पर अनेक आक्रमाण हुए है। पर अंततः साहित्य विजयी रहा। ``वैश्वीकरण के इस घमासान में भी साहित्य, कला और संस्कृति को बचाए रखना मनुष्यता का प्राथमिक कर्तव्य है।''(१) वैश्वीकरण के इस नई संस्कृति और स्थितियों का वहन करने के लिए हिंदी भाषा ने भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी है। वह पहले साहित्यिक परिनिष्ठित मानक रूप के लिए विख्यात है। साथ ही बदलते परिवेश में विद्यमान बाजारवाद को वहन करने के लिए भी तैयार है। वह आज मार्केट की भी भाषा बनी है। वैश्वीकरण और बाजारवाद ने भारत का बाजार हथियाने के लिए उस को अपना साधन बनाया है। वह आज मार्केटों को जोडनेवाली कडी बन गई है। भारत देश के अंतर्गत और देश के बाहर अनेक मार्केटों को जोडने का सफल कार्य हिंदी द्वारा हो रहा

Scanned with CamScanner

है। वैश्वीक मार्केट के अनेक गुण हिंदी ने अपनाए है। इसलिए हिंदी भाषा का बाजारू रूप प्रखरता से सामने आया है। वह बाजार का संचालन करनेवाली भाषा के रूप में प्रस्तुत हो रही है। आज भारत विश्व के सबसे बडे बाजार के रूप में उभर रहा है, यदि उत्पादकों को भारत के जन-जन तक अपने उत्पादन को पहुँचाना है, तो वह काम हिंदी द्वारा संभव है। दूरदर्शन के विज्ञापनों मे हिंदी भाषा सुनाई पडने लगी है। बाजारवाद की दृष्टि से हिंदी में संरचनागत या भाषाई परिवर्तन कर विश्व में अपनी सफलता दर्ज की है।

वैश्वीकरण में अपने आपको तैयार कर हिंदी ने अपनी भौगोलिक सिमाओं को भी तोड दिया है। वह बाजारवाद में उपयुक्त भाषा बनने से अनेक देशों के लिए अध्ययन का विषय बनी है। आज अनेक देशों के स्कूलों और विश्वविदयालयों में वह पहुँच चुकी है। अर्थात वह शिक्षा का माध्यम बनी है। वर्तमान स्थिति में हिंदी भाषा ने विदेशी क्षेत्रों में प्रवेश कर सबसे महत्वपूर्ण अगर कोई कार्य किया है तो वह है, ज्ञान के अनेक क्षेत्रों में प्रवेश। तकनिकी, मीडिया, विज्ञापन, वाणिज्य, विधि आदि ज्ञान के सभी क्षेत्रों में उसने अपनी स्थिति मजबूत की है। इस क्षेत्र में हिंदी का प्रचार और प्रसार जो स्वतंत्रता के पचास वर्षों में नहीं हो पाया था, वह इक्कीसवी सदी में हुआ है। इस वैश्वीकरण के युग में हिंदी का अपना चेहरा और रूप पुरी तरह से बदला है। डॉ. एन. जी. एमेकर इस संबंध में कहते है, ``हिंदी भाषा का यह रूप किसी देहाती गाँव की गोरी का महानगर में जाकर सेल्सउमेन्स के रूप में सफल कार्य करने जैसा है। एक सेल्समेन या सेल्सउमेन्स कि हिंदी भाषा की भूमिका वर्तमान समय में अपना विशेष स्थान भी प्राप्त कर रही है।``(२) भारतीय संदर्भ में वैश्वीकरण में हिंदी भाषा का सबसे अधिक लाभ यह हुआ है कि जो दक्षिण के ओर पूरब के कुछ राज्यों में जिस धिमी गती से और परेशानियों को झेलते हुए मार्गक्रम कर रही थी वहाँ अब उसकी गति तेज और परेशानियाँकम हुई है। वैश्वीकरण में हिंदी साहित्य ने भी अपना योगदान दिया है। जहाँ संपन्न देशों की आर्थिकी एक विशेष प्रकार की संस्कृति का रूप ले चुकी है और यह संवेदनहीन क्रुर संस्कृति है जो हमें ही नहीं हमारे वायुमंडल को जीवन नाशक बना रहे हे। वहाँ पर हिंदी साहित्य अत्यंत सतर्कता और नीर-क्षीर-विवेक से अपना उत्तरदायित्व निभा रही है। शिक्षा संस्था, राजनीतिक तथा सांस्कृतिक संस्थाएँ, खेल-कूद के संघ, साहित्यिक संस्थान व्यापार के केंद्र होने के कारण बाजारवाद के जाल में फँसते जा रहे है। इसलिए निबंध, आलेख, संस्मरण और यात्रा-विवरणें में भी लेखक भुमंडलीकृत बाजार-व्यवस्था के सर्वव्यापी असर को मूल तथ्य के रूप में लिखने का कार्य हिंदी साहित्य कर रहा है।

वैश्वीकरण के दौर में हिंदी की बनती नई भूमिका प्रशंसनिय है। साथ ही वह खतरे से खाली भी नहीं है। हिंदी ने अपनी बदलती भूमिका में अपना रूप बदला है, कार्य व्यापक किया है। लेकिन एक शंका यह भी जताई जा सकती है कि इस दौर में वह कही अपना अस्तित्व ही ना खो दे। वह बदले, परिवर्तित हो जाए, परिवर्धित हो जाए। लेकिन उसका जो मूल अस्तित्व है उस अस्तित्व को बनाए रखने की भी भूमिका बखूबी निभानी है। हमें विश्वास है कि हिंदी विश्व में अपना अस्तित्व सदा बनाए रखेगी।

संदर्भ :-

१. समकालीन भारतीय साहित्य पत्रिका, जुलाई - अगस्त २०११, पृ. १०
२. स्कॉलर्स वर्ल्ड मैग्झीन, जनवरी - २०१७, पृ. १३३

Scanned with CamScanner